आतपात्ययसंक्षिप्तनीवारासु निषादिभिः ।

मृगैर्वर्तितरोमन्थमुटजाग्नभूमिषु ।।52।।

अन्वय आतपात्ययसंक्षिप्तनीवारासु उटजाग्नभूमिषु निषादिभिः मृगैः वर्तितरोमन्थम् (आश्रमम् प्रापत्)।

अनुवाद (वह आश्रम) जहाँ पर्णशालाओं (पत्तों की कुटिया) की आँगन-भूमियों में, जिनमें सायंकाल हो जाने के कारण धूप के चले जाने से नीवार नामक धान को ढेरों के रूप में इकट्ठा कर रखा था, बैठे हुए हरिण जुगाली (रोमन्थ) कर रहे थे।

टिप्पणियां

आतपात्यय आतपस्य अत्ययः (षष्ठी तत्पुरुष) इति आतपात्ययः, आतपात्यये संक्षिप्ताः नीवाराः यासु ताः (बहुव्रीहि), तासु 'आग्नभूमिषु' का विशेषण। आतप-धूप, अत्यय-नाश, दूर हो जाना, संक्षिप्त-एकत्रित, सम् धातु क्षिप् क्त, अत्यय-अति-धातु इण्-अच्।

विशेष 'नीवार' जंगली धान का नाम है जिसे तपस्वी खाते हैं। तपस्वियों ने 'नीवार' धान को धूप में सुखाने के लिए कुटिया के आंगन में बिछा रखा था। धूप चले जाने पर उसे इकट्ठा कर उसकी ढेरियाँ बना रखी थी। जब महाराज दिलीप आश्रम में पहुंचे तो उन्होंने सायंकाल के समय झोपड़ियों की आंगन.भूमि में ऐसी नीवार की ढेरियां लगी देखी।

निषादिभिः नि धातु सद् णिनि, तृतीया बहुवचन, बैठे हुए।

वर्तितरोमन्थम् वर्तितः (धातु वृत् णिच् क्त) रोमन्थः यस्मिन् (बहुव्रीहि), तम्। 'आश्रम' का विशेषण। वह आश्रम जहां नीवार की ढेरियों से भरी आँगन-भूमियों में बैठे हरिण जुगाली कर रहे थे। वर्तितः-किया, रोमन्थ-जुगाली, पागुर। उस प्रकार के दृश्य तपोभूमियों में अधिकतया दृष्टिगोचर होते हैं। कालिदास ने अपने नाटकों में भी ऐसे वर्णन किए हैं।